मेरी वर्षों की तलाश पूरी हुई... -अनुभव

मैंने पाण्डव भवन, ज्ञानसरोवर, पीस पार्क सब देखा, मैंने अपने उस संघ की भी भीड़ देखी जहां लोग एक-दूसरे से लड़ जाते हैं रास्ते के लिए, लेकिन मैंने देखा कि यहां 25000 की संख्या होते हुए भी शांति की वर्षा हो रही है। इसमें कितना सुख है, ऐसा कहना है बाबा के एक मणि डॉ. शेषमणि का। आप रीवा में आर.एस.एस. में प्रमुख पद पर हैं, उनसे बातचीत के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं...

प्रश्नः आप कैसे इस ज्ञान में आये ?

उत्तरः मैं पिछले 25 वर्षों से आर.एस.एस. में कार्यरत हूँ। एक दिन मुझे अचानक टहलते हुए एक पुलिया पर ज्ञानामृत की पत्रिका मिली। इस बीच मेरे मन में बहुत उथल-पुथल चलती रही, कई मार्गों पर चलते हुए, चारो धाम करते हुए, कल्पवास गंगा के किनारे प्रयाग में एक मास करते हुए भी मन को शांति नहीं मिलती थी। दृष्टि और वृत्ति पवित्र नहीं होती थी। मैं इसी की तलाश में था। बस एक छोटा सा ही आधार बना मुझे ब्रह्माकुमारीज़ तक खींचने का।

प्रश्नः आपको सम्पूर्ण विश्वास कैसे हुआ ?

उत्तरः क्या भगवान से योग जुड़ सकता है, कैसे सभी समाधि योग लगाते रहे होंगे, इसकी कल्पना करता था लेकिन फिर भी कुछ समझ में नहीं आता। मैं घंटों पूजा भी करता था। ज्ञानामृत मिली तो मैंने उसमें एक बहन का लेख पढ़ा कि मैं 17 वर्षों से पूर्ण पवित्र हूँ और मेरा एक 17 वर्ष का बच्चा है और उनकी उम्र 45 वर्ष से अधिक नहीं है। मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरी 67 वर्ष की उम्र में भी दृष्टि और वृत्ति पवित्र नहीं हो रही है तो इसका कारण क्या है। जिस संघ में मैं 26 वर्षों से काम कर रहा हूँ, वह संघ भी मुझे अच्छा लगा, लेकिन वहां भी मुझे ये दृष्टि नहीं मिल पाई उतनी ज़्यादा। मैं उस पत्रिका को पढ़ने के बाद घर ले गया, फिर मैं सेंटर पर गया और मैंने कहा कि यहाँ जो भी होता है मुझे सीखना है। मुझे जिज्ञासा थी कि मैं भी देखूं जानूं कि कैसे होता है ये सब। मैंने वहां सात दिन का कोर्स किया। जब कोर्स किया तब मन में बहुत सारी शंकाएं थीं, पर मुझे यकीन था कि इससे जुड़ा रहूँ तो मुझे मेरी शंकाओं का निवारण अवश्य मिलेगा।

प्रश्नः मधुबन कैसे आना हुआ ?

उत्तरः पढ़ाई के चलने के साथ-साथ मुझे परमात्मा से मिलने की भी इच्छा उत्पन्न हुई। पढ़ाई के बीच में ही एक बार मधुबन से दो भाई गये हुए थे, उनके क्लास के बाद मेरा योग भी लगने लगा। फिर मुझे मधुबन आने का मौका मिला। मैं जब यहाँ आया और बस से उतरते ही मैंने देखा कि बाबा मेरे सामने बाहें फैलाये खड़ा है, उसे देखते ही ऐसा लगा जैसे मैं स्वर्ग में आ गया हूँ। मैंने पाण्डव भवन, ज्ञानसरोवर, पीस पार्क सब देखा और यहां आने वाले भाई बहनों का इतना बड़ा संगठन देखा, मैंने अपने उस संघ की भी भीड़ देखी है, कई बार मारामारी हो जाती है, एक-दूसरे से लड़ जाते हैं रास्ते के लिए कि मुझे इसी रास्ते से जाना है, लेकिन मैंने यहाँ पाया कि 25000 की संख्या होते हुए भी, चाहे भोजन का स्थान हो, विश्राम का स्थान हो या क्लास का समय, हर वक्त इतनी शांति जो मैंने महसूस की वो कहीं और नहीं की। मैंने जाना कि यहाँ शान्ति की वर्षा हो रही है और इसी शान्ति में ही सुख है। बाबा हमें ज्ञानरत्नों से सजाते हैं, योगी बनाते हैं, और मुझे तो पूरा विश्वास है कि यदि परमात्मा को मैं इसी तरह याद करता रहा और करूंगा तो सम्भवतः जिस चीज़ की मुझे तलाश है, वह तलाश मेरी पूरी हो जाएगी। मैं परमात्मा का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि उन्होंने मुझे अपना बना लिया।

प्रश्नः आप आध्यात्मिक पत्रिकाओं में से किनका ज़्यादा अध्ययन करते हैं ?

उत्तरः मैं प्रमुख रूप से ओमशान्ति मीडिया तथा ज्ञानामृत पत्रिकाओं का मार्ग दर्शन लेता तथा साथ ही साथ सेवाकेन्द्र पर बड़े भाइयों व बहनों से मार्गदर्शन लेता रहता हूँ और अच्छी योग की स्थिति बनाकर इस सुंदर मार्ग पर चलने का पूरा प्रयत्न कर भी रहा हूँ और करता रहूंगा।

प्रश्नः ऐसी कोई आदत जो ज्ञान में आने से पहले आप छोड़ना चाहते थे, आपको अच्छी नहीं लगती थी लेकिन छूटती नहीं थी और इस ज्ञान में आने के बाद सहज ही छूट गई हो ?

उत्तरः जी हाँ, बिल्कुल। जिस चीज़ की मैं खासतौर से तलाश में था, उन दो चीज़ों की, वो दोनों मुझे मिलने लगी हैं, मैं पूर्ण तो नहीं कह सकता हूँ, लेकिन मैं कहूँ कि 70 प्रतिशत मैं पा चुका हूँ तो गलत नहीं होगा। मेरी 18 साल की एक नातिन है तो अन्य बच्चियाँ भी मुझे नातिन जैसी क्यों नज़र नहीं आतीं, उनका देह ही क्यों नज़र आता है मुझे। लेकिन इस ज्ञान से जुड़ने के बाद 5 महीने के भीतर ही मेरी दृष्टि-वृत्ति 70 प्रतिशत बदल गई है। मेरी कृति में कुछ गलत नहीं था, लेकिन मेरी दृष्टि-वृत्ति में बहुत परिवर्तन आया है। अब मुझे बहुत ही शांति की अनुभूति होती है। दूसरी बात, मैं सोचता था कि ये सन्यासी, महात्माएं कैसे योग लगा लेते हैं, कैसे समाधिस्थ हो जाते हैं और जुड़ जाते हैं प्रभु से, लेकिन मैं महसूस करता हूँ कि यहाँ अपने परमपिता शिव परमात्मा से मिलने के बाद, उनकी पहचान पाने के बाद उन्हें याद करना, उनसे जुड़ना कितना सहज हो जाता है।

प्रश्नः परमात्मा की याद से आपको कैसी महसूसता होती है ?

उत्तरः मुझे बहुत शांति की अनुभूति होती है। परमात्मा की याद से मैं स्वयं हर रूप से शारीरिक, मानसिक व अन्य रूप से स्वस्थ होता हुआ महसूस करता हूँ, मैं जान गया हूँ कि यही सहज और सच्चा राजयोग है। इन दो चीज़ों की मुझे प्राप्ति हुई है और जो दो बुराई मैं छोड़ना चाहता था, उससे भी मैं दूर होता जा रहा हूँ।

मेरा अभी तक का एक अच्छा अनुभव यह भी है कि जब तक मैं आध्यात्मिक पत्रिका तथा परमात्मा की मुरली सुनकर पुरुषार्थ का चार्ट लिख न लूँ, मुझे चैन नहीं आता। मैं परमात्मा को दिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने मुझे 5 महीने में ही अपना बना लिया। मैंने निश्चय कर लिया है कि जो मैंने पाया है वो अपने परिवार के अन्य सदस्यों एवं समाज में भी इस ज्ञान और परमात्म संदेश का प्रसार करने का पूरा प्रयत्न करूंगा।

मेरा अभी तक का एक अच्छा अनुभव यह भी है कि जब तक मैं आध्यात्मिक पत्रिका तथा परमात्मा की मुरली सुनकर पुरुषार्थ का चार्ट लिख न लूँ, मुझे चैन नहीं आता। मैं परमात्मा को दिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने मुझे 5 महीने में ही अपना बना लिया। मैंने निश्चय कर लिया है कि जो मैंने पाया है वो अपनी युगल को भी दिलाऊंगा, अपने परिवार के अन्य सदस्यों एवं समाज में भी इस ज्ञान और परमात्म संदेश का प्रसार करने का पूरा प्रयत्न करूंगा।

फरीदाबाद सेक्टर 19। किसान भवन के उद्घाटन समारोह में मुख्यमंत्री माननीय एम. खट्टर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हरीश बहन।

सैफयी-उ.प्र.। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष व सांसद मुलायम सिंह यादव के जन्मदिवस पर उन्हें ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. नीतू, ब्र.कु. किरण व ब्र.कु. तेजस्विनी। साथ हैं ग्रामीण आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. टी. प्रभाकरन, मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, सांसद राम गोपाल यादव व अन्य।

सासाराम-बिहार। ब्रह्माबाबा के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सांसद छेदी पासवान को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. बबिता।

श्यामनगर-पश्चिम बंगाल। 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में दिबेन्दु चौधरी,प्रिन्सीपल डायरेक्टर,ऑर्डिनेंस फैक्ट्री इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग, विकास रंजन भाई, ब्र.कु. रंजीता व अन्य।

ऋषिकेश। 'विश्व शांति' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए श्री श्री 1008 महामण्डलेश्वर ईश्वर दास जी महाराज,अध्यक्ष,ईश्वर आश्रम। साथ हैं सुरेन्द्र कथुरिया,निरहंकारी मंडल के उत्तराखण्ड प्रभारी व ब्र.कु. आरती।

दिल्ली-ओम विहार(उत्तम नगर)। 'खुशियों भरी ज़िन्दगी' विषयक कार्यक्रम के दौरान तिलोतमा चौधरी,चेयरपर्सन,एम.सी.डी. नज़फगढ़ को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. विमला व ब्र.कु. जानकी।

दिल्ली-सीताराम बाज़ार। जी.बी.पी. हॉस्पिटल योगा सेंटर में मेडिटेशन क्लास के पश्चात् नर्सेज़ के साथ ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. गुंजन।

डुंगरपुर-राज.। मकर संक्रान्ति पर आयोजित कार्यक्रम में दीप पज्वलित करते हुए ब्र.कु. विजयलक्ष्मी, भारत विकास परिषद के अध्यक्ष दिनेश श्रीमाल, डाईट डुंगरपुर की प्रचार्या आभा मेहता, भाजपा के पिछड़ा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रकाश पंचाल, शिक्षण संघ के अध्यक्ष ऋषिन चौबीसा, धनेश्वर रोत, शंकर सिंह सोलंकी व अन्य गणमान्य जन।